

राम बुझावन सिंह

जन्म तिथि : 1 अप्रैल 1920

जन्म स्थान : सतपरसा, मसौढ़ी, पटना

निवास : बाकरगंज (बजाजा), पटना-800004

सिच्छा : एम० ए० (हिन्दी)

पदस्थापित :

1. बी.एन. कॉलेज, पटना में हिन्दी के प्राध्यापक पद से सेवा-निवृत
2. बिहार मगही अकादमी, पटना के अध्यक्ष पद पर रहलन
3. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के निदेशक पद पर आसीन

सम्पादित ग्रंथ :

1. निराला : जीवन और साहित्य
2. रेणु : कृतित्व और श्रद्धांजलि
3. गद्य विहार

पत्रिका सम्पादन :

1. 'नवशक्ति' में सह सम्पादक
2. 'दैनिक राष्ट्रवाणी' में सह सम्पादक

ललित निबंध साहित्य के एगो विधा हे। मगही भासा में भी ललित निबंध के चलन हे। एकर नमूना के रूप में इहाँ ललित निबंध देल जाइत हे, ताकि ई विधा से छात्र लोग परिचित हो सकथ। ई निबंध में बतावल गेल हे कि मगह में गेला पर तीन किसिम के टेंढ़ से पाला पड़त। ऊ तीनों टेंढ़िया के विस्तार से जानकारी देके ई बतावे के कोसिस कइल गेल हे कि मगह के टेंढ़ापन एकर दोस न होके खूबी हे।

मग्गह के तीन टेंढ़

मग्गह के बारे में एगो कहाउत प्रचलित हे कि मग्गह में तीन टेंढ़ होवऽ हे–राह टेंढ़, अदमी टेंढ़ आउ बोली टेंढ़। ऊपर से देखे में लगऽ हे कि ई कहाउत मग्गह ला अपमानजनक हे, काहे कि कोई के टेंढ़ कह देवल असिस्ट नियर बुझा हे। पर सच पूछीं तऽ कहाउत अइसहीं न बने, खूब सोच-समझ के बनऽ हे, जेकरा में बहुत कुछ सच्चाई रहऽ हे। ई कहाउत एकर अपवाद न हे।

सबसे पहिले 'राह टेंढ़' के बात लीं। कहीं के भी राह के घना संबंध उहाँ के धरती, पानी, यानी भूगोल के बनावट से रहऽ हे। जइसन जहाँ के हवा-पानी आउ मट्टी रहत, ओइसने उहाँ के सबकुछ बन जायत—राह-बाट, लोग-बाग आउ सभ्यता-संस्कृति। एकरे जयशंकर प्रसाद जी अप्पन नाटक 'विशाख' के परिचय में कहलन हे—'हमें हमारी गिरी दशा से उठाने के लिए हमारे जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है, उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमें मुझे पूर्ण सन्देह है।'

ई कथन में 'हमारे जलवायु के अनुकूल हमारी सभ्यता' पर ध्यान देवे के हे। हम्मर सभ्यता हम्मर देश के जलवायु के अनुकूल ही बनत, तऽ राह-बाट अप्पन मट्टी-पानी से बचके कइसे रहत ?

ई मग्गह के भौगोलिक तथ्य हे कि एकर मट्टी धूसर, बलुआही आउ मरल नऽ हे, जे पानी के तुरते सोख लेहे। बहुत जगह के मट्टी बलुआही पावल जाहे जे बरखा के पानी के तुरते सोख लेहे। बरखा छुटला पर पाँव झाड़ दीं, सब धूल झड़ जायत। चप्पल-जूता पहिन के तुरत चले लगीं। तनिक्को मट्टी न लगत। उहाँ के लोग अप्पन मट्टी के ई खूबी मानऽ हथ कि बरसात में भी उहाँ जूता-चप्पल चलऽ हे। उनकर ई खूबी उनका मुबारक ! खूब जूता-चप्पल उहाँ चले, एकरा में हमरा का एतराज हे ?

पर मग्गह के मट्टी के ई रेवाज न हे। इहाँ के मट्टी जादेतर काला, केवाल मट्टी हे, जेकर खूबी हे कि पानी नऽ पड़त, तऽ सूख के ऊ अइसन कड़ा हो जायत कि ओकरा आगे पत्थर भी मात खा जायत। ठेंस लगला पर ओकर कड़ाई बुझायत। पर अगर थोड़ा पानी के संसर्ग ओकरा भेंट जायत, तऽ ऊ एतना लसगर हो जायत कि अपने के गोड़ न छोड़त। ई धूरी नऽ हे, जेकरा झाड़ के अपने चल देम। ई हम्मर मट्टी के सनेह हे, जे गीला होला पर अइसन पकड़ लेहे कि छोड़ावल

मोस्किल होवऽ हे! सनेह अइसने बरियार होवऽ हे। सनेह के आगे केकर जोर चलल हे भला ?

एही से जब मग्गह के धरती बरखा में डूब जाहे, तऽ बड़ा घूम-घुमाव के राह बनऽ हे। लगत कि पावे भर तो जाय ला हे। पर जाय लगबऽ तऽ राह लम्बा हो जायत। कवि के बात इयाद आ जाहे—'चलता-चलता जुग गया, पाव कोस पर गाँव।' चलनिहार कवि के मगहे से पाला पड़ल होयत। लम्बा राह टेंढ़ा होइए जायत। ओहू में सनेह से भींगल, चिक्कन, लथपथ।

जे गुन मगही राह के, ओही मगहियन अदमी के भी हे। इहाँ भी धरती-मट्टी के ही असर काम करऽ हे। पहिले अदमी के माने अदमी के देह से लीं। मग्गह के मट्टी में खेसारी खूब उपजऽ हे, जेकर उपयोग जानवर से लेके अदमी तक खूब करऽ हथ। जहिया से खेसारी में टूसा निकलऽ हे तहिए से ओकर साग चले लगऽ हे। देहात तो देहात, सहर के लोग के भी ओकरा ला परान छछनइत रहऽ हे। अप्पन देहाती कुल-कुटुम्ब के पहिलहीं सनेस भेज देतन कि गंगा नेहाय अइहऽ तऽ खेसारी के साग लावे ला मत भूलिहऽ! खेसारी के साग में एतना सवाद हे। मगर ओकर दाल ? ओकरा बारे में डाक्टर लोग कहऽ हथ कि बहुत दिन तक लगातार ओकर दाल खाय से पाँव में गठिया हो जाय के डर रहऽ हे। ई बात में सच्चाई हो सकऽ हे। खेसारी के दाल सबसे सस्ता होवऽ हे। गरीब-गुरबा ओकरा खूब खा हथ। खेतिहर मजदूर के भी खेसारिये मजूरी में देवल जाहे। ई से अक्सर जन-मजूर के पाँव गठिया पकड़ के लाँगड़ हो जाय, टेंढ़ हो जाय, तऽ कउन अचरज हो गेल ?

अब टेंढ़ के मतलब अदमी के देह से नऽ, सोभाव से लेल जाय। इहाँ फिर हम मग्गह के धरती-मट्टी के इयाद दिलाएम। ओकरा अगर सनेह से भिंगाईं, तऽ ऊ एतना चिकना हो जायत कि अपने फिसल जाएम, देह से आउ मन से भी। पर अगर ओकरा से सुखले बतियाएम, बिना सनेह दरसयले, तऽ ऊ पत्थर नियर कठोर हो जायत। एकरे टेंढ़ भी कह सकऽ ही। पर सच पूछीं तऽ एकरे अदमी के स्वाभिमान भी कहल जाहे, जे मगहियन में कूट-कूट के भरल हे। एही ओकर खूबी हे।

इहाँ हम फिर पोथी-पुरान के इयाद दिलाएम। धनुही-भंग के बाद जब परसुराम फरसा तानले जनकपुर पहुँचलन, तऽ सब कोई तो सटक सीताराम हो गेलन, पर लछुमन के त्योरी चढ़ गेल। ऊ उनकर नहला पर दहला कसे लगलन–'अइसन-अइसन तीर-कमान आउ फरसा हम ढेर देखली हे।' परसुराम के जरइत आग में घीउ पड़ गेल। ऊ फरसा के धार पर अँगुरी फेरे लगलन।

एही बीच राम आके उनका सांत कयलन–'महाराज, अगर अपने खाली मुनि वेस में अइती, तऽ लछुमन अपने के पाँव पर गिर जाइत हल। पर अपने के तीर, कमान आउ फरसा देख के ओकर छत्रियाँव भड़क उठल। एकरा में ओकर दोस न हे।'

अब इहाँ बूझीं कि लछुमन में ई तेवर कहाँ से आयल। हम्मर बात के बकवास न मानल जाय। हम निवेदन करम कि लछुमन में ई तेवर उनकर ननिहाल के धरती-मट्टी से आयल हल, जे मग्गह के गया छेत्र में हल। आज भी उनकर ननिहाल के गाँव रामपुर चाईं के नाम से मौजूद हे, जेकरे पास आज भी मसहूर सूर्य-मन्दिर देकुड़ (देवकुण्ड) हे। कहल जाहे कि राम जब पिता के पिण्डदान ला गया जाइत हलन, तऽ एक रात उहें ननिहाल में ठहर के बिसराम कयलन हल, जेकर इयाद में आज भी ऊ गाँव रामपुर कहला रहल हे।

तऽ जइसे लछुमन के स्वाभिमान कोई के ठोकर बरदास्त न कयलक, ओइसहीं मगहियन भी कड़ाई के साथ पेस आवेवला के साथे कड़ा बन जा हथ। एही से लोग कह दे हथ कि मग्गह के अदमी टेंढ़ होवऽ हे। लोग हमरा टेंढ़ कहथ इया सोझ, हम तो अप्पन धरती-मिट्टी से लचार ही। हँ, जरा सनेह देखला के तो देखीं कि हम केतना नरम हो जाही। केवाले मट्टी से तो आखिर हम्मर तन-मन बनल हे।

गोसाईं बाबा भी टेंढ़ से काफी घबरा हलन– 'टेंढ़ जानि संका सब काहू'। लगऽ हे कि उनका कोई मगहिया से पाला पड़ गेल होयत। एही से ओहू मग्गह के गरियावे में बाज न अयलन–'गया मग्गह महँ तीरथ जैसे।' हमरा से कोई के संका, डर-भय न होय, एही से का हम पूरनमासी के चाँद बन जाईं, जेकरा हर कोई राहू बनके दबोच देवे ? हम वक्र चन्द्रमा रहम से कबूल, पर कोई राहू के ग्रास नऽ बनम। बनम तऽ 'नगद दमादै अभिमानी के'।

रह गेल 'बोली टेंढ़' के बात। 'निज कवित्त केहि लागे न नीका' न्याय से सोचीं तऽ बात अपने-आप खुलासा हो जाहे। पर अपना से तटस्थ होके जरा सोचऽ ही तऽ ई मान लेवे पड़ऽ हे कि मगहियन के जबान पर अड़ोस-पड़ोस के बोली जल्दी चढ़ जाहे। पर हम्मर पड़ोसी के जबान पर मगही बहुत कम चढ़ऽ हे। अप्पन-अप्पन रीत-रेवाज, संस्कार हे। एकरा अलावे हमरा तो बुझा हे कि 'निज भासा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल' के मरम ऊ हमरा से पहिले आउ जादे समझ गेलन हे, ओकर सवाद खूब बूझ गेलन हे। आज दुनिया के दौड़ में आगे निकल जाय ला ई बहुत कारगर नुस्खा हे।

भासा-विज्ञान के नजर से देखला पर सचमुच अइसन परतीत हो हे कि मगही बोली असानी से नऽ साधल जा सकऽ हे। 'तीन कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी' जेतना मगह में पावल जाहे, ओतना सायदे कहीं दूसर जगह। पटना, गया, नालन्दा, औरंगाबाद, पलामू, हजारीबाग, राँची के मगही बोली में ई फरक साफ बुझा जायत। एही से मगहियन ला भी मगही बोली सोझ न बुझाय, गैर-मगहियन ला ई बोली टेंढ़ लगे तो कउन अचरज ? खूब ठेकाने से मगही बोली जबान पर चढ़ जाय, एकरा ला कुछ साधना करे के जरूरत हे। गैर-मगही भाई एकरा टेंढ़ कहथ इया सोझ, पर हम तो एही कहम कि 'आती है मगही जबां आते-आते'।

जे ई मगही के मरम समझ जयतन, ऊ बुद्ध बन जयतन। सिद्धार्थ के ढेर संगी-साथी अपना-अपना नियर उनका प्रबोध के हार गेलन, पर पार न पयलन। आखिर निरंजना के कगार पर से एगो बोल फूटल–'बीना के तार नियर मन के साधऽ; न जादे तानऽ न जादे ढीला छोड़ऽ'। के न जाने कि सिद्धार्थ ई मरम-बोल के साधलन, तऽ बुद्ध बन गेलन। आज भी जे मगही के मरम बूझ लेतन, ऊ प्रबुद्ध बन जयतन। न बूझेवला के तो ई टेंढ़ा बुझयबे करत।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) राह टेंढ़ के मतलब का हे ? समझावऽ।

(ख) नीचे लिखल कथन केकर हे, सही पर ☑ लगावऽ :—

'टेंढ़ जानि संका सब काहू।'

(i) कबीरदास

(ii) रसखान

(iii) तुलसीदास

(iv) रामसनेही दास

(ग) 'मगह के अदमी टेंढ़ होवऽ हे' ई कथन के मतलब समझावऽ।

(घ) 'बोली टेंढ़' के समझा के बतावऽ।

(ङ) 'जे ई मगही के मरम समझ जयतन, ऊ बुद्ध बन जयतन।' एकर आसय समझावऽ।

लिखित :

1. लेखक राम बुझावन सिंह के परिचय पाँच वाक्य में दऽ ।
2. पाठ में कउन-कउन तीन गो टेंढ़ के बखान भेल हे ?
3. मग्गह के मट्टी कइसन हे आउ कइसन नऽ हे ?
4. मग्गह के अदमी के गुन के तुलना केकरा से कइल गेल हे ? दुन्नो में कउन-कउन समानता हे ?
5. खेसारी के साग आउ खेसारी के दाल के तासीर में का फरक होवऽ हे ?
6. लछुमन के बात करे के ढंग आउ तेवर कहाँ से मिलल ?
7. मगही बोलल जायवला पाँच गो प्रमुख जगह के नाम बतावऽ।
8. निरंजना के कगार पर कउन बोल फूटल जेकरा से सिद्धार्थ बुद्ध बन गेलन ?
9. लेखक पूरनमासी के चाँद बने के खिलाफ काहे हथ ? समझा के लिखऽ।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सब्द-युग्म के अर्थ बतावऽ :—

   हवा-पानी, राह-बाट, सभ्यता-संस्कृति, लोग-बाग,
   घूम-घुमाव, कुल-कुटुम्ब, धरती-मट्टी, संगी-साथी,
   पोथी-पुरान, अड़ोस-पड़ोस, रीत-रेवाज

2. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ बतावइत वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   नहला पर दहला, आग में घीउ, जबान पर चढ़ना
3. 'महाराज' सब्द 'राज' में 'महा' उपसर्ग लगे से बनल हे। अइसने पाँच गो उपसर्ग से बनल सब्द पाठ से चुन के लिखऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'मग्गह के संस्कृति' पर एगो संक्षेप में लेख लिखऽ।
2. 'ई निबंध मग्गह के गरिमा के खिलाफ हे' एकरा पर वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन 'बुद्ध जयन्ती' के अवसर पर करऽ।

सब्दार्थ :

धूसर	—	धूरी से भरल
बलुआही	—	बालू मिलल
सनेह	—	प्रेम
बरियार	—	मजबूत
छत्रियाँव	—	छत्री के गुन
बकवास	—	बिना मतलब के बात
कवित्त	—	कविता
उन्नति	—	उत्थान
बानी	—	बोली (भासा)

●●●





डॉ० राम प्रसाद सिंह

जन्म तिथि : 10 जुलाई 1933
जन्म स्थान : बेलखरा, अरवल

निवास : मगही लोक, तुतबाड़ी, गया

सिच्छा : एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी.

सम्प्रति : जगजीवन कॉलेज, गया में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से सेवा-निवृत

परकासित पुस्तक :

1. मगध की लोक-कथाएँ : अनुशीलन एवं संचयन
2. मगही लोक-गीत के वृहत् संग्रह
3. मगही साहित्य का इतिहास
4. नरक सरग धरती (मगही उपन्यास)
5. समस्या (उपन्यास)
6. लोहा मरद (मगही महाकाव्य)
7. सरहपाद (प्रबंध काव्य)

सम्पादित ग्रंथ :

8. परस पल्लव (कविता संकलन)
9. नव निबंध (निबंध संग्रह)
10. मगही के मानक रूप (निबंध संग्रह)
11. सोरही (कहानी संग्रह)
12. एकारसी (एकांकी संग्रह)

पत्रिका सम्पादन :

मगही लोक (मासिक पत्रिका)

मगही समाज (मासिक पत्रिका)

पुरस्कार :

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार, नई दिल्ली से मगही साहित्य सम्मान मिलल।
2. बिहार मगही अकादमी, पटना के अध्यक्ष पद पर रहलन।

ई कहानी खानाबदोस जीवन के सच्चाई के तस्वीर हे । कहानी के माध्यम से लेखक बतावेला चाहइत हथ कि नट-नट्टिन एक जगह स्थायी रूप से न रहऽ हथ, बाकि ऊ भी अदमिये हथ। उनका साथ भी आम अदमी के जइसन बेवहार करे के चाहीं। उनकर जीवन के सभ्य आउ सुसंस्कृत बनावे खातिर सरकार के भी धेयान देवे के चाहीं, ताकि देस के चहुँमुखी विकास के मुख्य धारा में ऊ भी जुड़ सकथ।

बराबर के तलहट्टी में

'एक कटोरा भात दे दे माई । तोरा दूध-पूत बढ़ती करथुन सिव बाबा।' अवाज सुनके तिलेसरी के माय खखुआय लगल—'धर मुझौसी के रे, अभी भातो न बनल हे आउ टपक पड़ल। दिन भर तम्बू में पड़ल रहऽ हे आउ बेरे डुबते कटोरा लेके गाँव में निकल जाहे।

'काहे खिसिआइत ही माँ जी ! तोरा देस में आ गेली तऽ तोहनी पर पहाड़ टूट गेलो। का ई हम्मर देस न हे जेकर जमीन पर रह सकऽ ही।'

'धत् भतरमारी के रे, माँगत भीख आउ बूझत देस के जामा। मार तो एक लकड़ी कि रिरिआइत भागे। कान कपार बचा के दे एक झवदा।'

तिलेसरी के माय के डाँट के असर ओकरा पर कुच्छो न पड़ल। ऊ रटइत रहल—'माँ जी, छुच्छे सियार खाइत-खाइत मिजाज घबरा गेलो हे, एक कटोरी भात दे दे। सिव जी तोरा भला करतो।'

'भागऽ हें कि नऽ सिव के चाची, कि तिलेसरी से माँग धोआ दियो। अगे तिलेसरी, तिलेसरी गे, तूँ मर गेलें, अबके नरेटी चिरइत हले आउ तुरते लगऽ हउ कि उपह गेले।'

'अयलियो माय, का कहऽ हें ? तनि भुलेटन हीं चल गेलियो हल।'

'लगऽ हो कि भुलेटन के बेटा तोरा घोंटी पिया देलको हे। हरजाई कहीं के, जो ओकरे हीं रह ! कुल के उजागर कर !'

'तिलेसरी माय के धेघा में लपटा गेल तब ओकर सब खींस खतम हो गेल। एकलौती बेटी के चुम्मा लेके दुलार से डाँटलक—'देख बेटी, तूँ सेयान हो गेले। बेर डुबे के बाद तोरा एन्ने-ओन्ने घूमे में ठीक न हे।'

'अच्छे माय ! अब हम तोरे भिजुन बइठल रहबो।'

'बइठे कहइत ही। दिन खानी टोला-टाटी में घूर लिहें। देख तो तनि दूरा पर एगो नट्टिन रटइत हो। जाके कह दे कि खाय हो जाएत, तऽ तनि देरी में भात ले जाएत। समझलें, समझा के कह दे।'

तिलेसरी दूरा पर आयल तऽ ऊ भिखारिन ओकरा आँख चिर के देखे लगल। तिलेसरी कहलक—'आखें से खा जइबे ? कय दिन से भुक्खल हें।'

भिखारिन घिघिआयल—'माईं तनि एक कटोरी भात ला दे। तोर दुलहा तोरा बहुत चाहतो। खेते में धान के बोझा पर बइठा के दुलार करतो।'

तिलेसरी अकचका गेल। का ई हमनी के सब करतूत जान गेल हे ? तब तो बड़ी मुस्किल हो जायत, से ऊ पुछलक—'का तूँ राम भज्जू के जानऽ हें ?'

'हँ-हँ बेटी, राम भज्जू, सिव भज्जू, किसन भज्जू, सबके जानऽ हियो ?'' का काम हो ? तुरते करवा देबो।'

तिलेसरी समझलक कि राम भज्जू के साथ हम्मर प्रेम के बारे में ई जान गेल हे। से एकरा से मिलिए के रहे में फयदा हे। बोलल—'भात होवे दे, तनि देरी में अइहें आउ बड़का कटोरी ले के अइहें। दाल-भात-तीना देबो, आउ राम भज्जू के बात केकरो से मत कहिहें।'

सात घाट के पानी पिये ओली ऊ भिखारिन के असलियत समझे में देरी न लगल। ओकरा एगो अच्छा गँहकी मिल गेल हल जेकरा गाहे-बगाहे भँजावल जा सकऽ हे। ऊ गाँव के बाहर अप्पन तम्बू में चल गेल।

खानाबदोसी के ई जमात, आज एक हफ्ता से बराबर पहाड़ के तलहट्टी में डेरा डालले हे। 15-20 गो तम्बू गिरल हे आउ एकह गो तम्बू में एकह परिवार रहऽ हे। दिन खनी एहनी के मरद बराबर पहाड़ से सियार, खिखिर, खरहा, साँप आउ साहिल पकड़ लावऽ हथ। साँझ खनी माँस पकऽ हे। एहनी के औरत पास-पड़ोस के गाँव से भात-रोटी माँग के लावऽ हे आउ सब मिल के रात में खा-पीअऽ हे। कभी-कभी महुआ के दारू पी के एहनी रात-रात भर नाचऽ हथ।

आज दिन रहते डोमन के एगो सियार आउ दू गो साहिल हाथ लग गेल हल। अप्पन तम्बू में आ के अप्पन मेहरारू झुलनी से कहलक—'भात माँग लाव, तब तक हम सियार के झोलऽ हिओ। आउ हँ तनि मसाला भी रगड़ दे झुलनी।

मसाला पीस के पथले पर छोड़ देलक आउ कटोरी ले के गाँव में चल गेल, बाकि खालिये कटोरी देख के डोमन साँप नियन फुँफकारल—'भात न मिललो तऽ ओनहीं केकरो हीं रह काहे न गेले।' भुलनी दाँत निपोरे लगल तऽ डोमन आउ बिगड़ल—'बतीसी देखा देले, एही पैना से तोड़ देबो।'

'अरे बिगड़ैत काहे हें राजा, आज खाली भाते नऽ, दालो-तीना खिलैबो। तनि सबुर करऽ।'

डोमन के तेवर बदल गेल—'देख भुलनी, दिन भर सियार-खिखिर के पीछे दउड़इत-दउड़इत अक्किल गुम हो जाहे। साँझ खनी कुच्छो बोल दियो, तऽ तूँ खराब न मानिहें डोमन भुलनी के अप्पन बाँह में दबा लेलक, फिन आँख में कहलक–'पौ बारह हो।'

भुलनी तम्बू से कटोरा के जगह अलमुनिया के बड़का थरिया निकाललक आउ छमकइत सिमरा गाँव में चल गेल। ओकरा पहुँचे में तनि देरी भे गेल, तऽ तिलेसरी हाली-हाली हुलक के दूरा पर देखे जा हल। ओकरा डर हल कि भिखारिन कहीं भात लेले बिना घुर न जाय आउ राम भज्जू के रहस्य खोल न देवे। तब तो सब गुड़-गोबर हो जायत। से तिलेसरी कभी गलियो में चक्कर लगा जाय। एकरा से आम के आम आउ गुठली के दाम भी मिल जाय—राम भज्जू भी मिल जाय, रात के अन्हारा में गलबाहीं भी हो जाय। ई तरी दुन्नों अन्हार गली के एगो भीत्ती तर लपटायल हल कि भुलनी आ गेल। तिलेसरी तनि अलगे होके राम भज्जू पर खिसिआयल आउ भुलनी से घिघिआयल—'तोर असरा में घर से निकललियो हल कि ई करिअट्ठा से टकरा गेलियो।'

भुलनी कहलक—'ई उमर में ई सब होतहीं रहऽ हे बेटी ! हम तोरा नियन हली तऽ चार-चार छैलन के नचावऽ हलियो।'

तिलेसरी खुस होके भुलनी के अप्पन दूरा पर ले गेल आउ घर से ढेर मानी भात-दाल तीना लाके ओकर थरिया भर देलक। भुलनी खुस होके आसीर्वाद देवे लगल—'तोरा दुलहा कभी अपना से अलगे न रखतो, खुस रह बेटी।'

तिलेसरी गदगद होके कहलक—'जब जरुरत होतो तब चल अइहऽ।'

एक रोज जब हम बराबर के तलहट्टी में घूमे गेली तब एगो फुरमुट में साहिल के एगो जोड़ा के कुलेल करइत देखली। जब ओहनी अप्पन देह के काँटा फुलावथ तऽ छाता नियन लउके लगे। सूरज के साँझ के किरिंग ओहनी पर परइत हल आउ

ओहनी खुसी में उछलइत हलन। ओही घड़ी एगो पत्थर ओहिजा आ के गिरल आउ ओकर चोट से एगो साहिल तुरते दम तोड़ देलक। दुसरका एतना दुखी हल कि अप्पन मरल साथी के छोड़ के नऽ भागल। ऊ ओकरा सूँघइत रहल, तबहियें एगो करिआ आउ मोटगर अदमी आ के दुन्नो साहिल के पकड़लक आउ बुदबुदाइत लेके चल देलक।

हमरा ई घटना एतना परभावित कइलक कि हम साहिल मारे ओला के पीछे-पीछे जाय लगली। ऊ खुसी में झपट रहल हल। जब ऊ तम्बू में पहुँचल तब हमरा नियन नया अदमी के देख के ओहनी ईंटा-पत्थर लेके हमरा पर दउड़लन। हम बड़ी नेवतइ से कहली—'हम तोहनी के कुच्छो करे न अयलियो हे, बलुक अपने काम से घुमइत हली तब इनका साहिल मारइत देखली।'

'का तूँ साहिल खयबऽ ? एगो ला दियो कि कोई खोपिया हऽ।'

'खोपिया-उपिया नऽ ही बाबा ! हम एगो तोहनिये नियम अदमी ही।'

तब तूँ हमनी के बीच में काहे पड़लऽ ? तोहनी के हमरा सियार-साहिल खायल भी अच्छा नऽ लगे। अपने तो गुड़-दूध पीते होयबऽ।'

हम बात के भरमावे ला कहली—'दूध-गुड़ कहाँ मिलऽ हे, बाकि आज हम तोहनिये साथे खयबो।'

'इहाँ के खाय निगलैतो'—डोमन अवाज कयलक।

'तोहनी कइसे निगलऽ हें, तोहनियो तो आखिर अदमिये हें।'

'सरकार हमनी के अदमी कहाँ बुझऽ हे। रहेला एक बित्ता जमीन तो देबे न करे।'

हम तनि अपनापन देखौली—'ई तलहट्टी में अगर जमीन मिल जाय तऽ तोहनी इहें बसल करिहें। मेहनत मजूरी कर लिहें।'

हम्मर बात सुनके दू-चार गो जवान हमरा भिर धमक आयल। ओहनी के देह से अजब गंध आ रहल हल। लगल कि ओहनी के बोलला पर हमरा ओंकाई बरे लगल, से हम दू-चार कदम पीछे हट गेली। एकरा पर एगो बोलल—'हमनी से छुआय में डरइत हऽ, तऽ जमीन कउची दिलयबऽ।'

'नऽ भाई, असइन काहे सोचऽ हें, हम तो तम्बू में बइठ सकऽ हियो।'

तब एगो जवान हम्मर हाथ पकड़ लेलक आउ अप्पन तम्बू में खींच के ले गेल। तम्बू का, कबाड़ीखाना हल। एक दन्ने पत्थर रख के खाय बनावे ला चुल्हा बनल

हल। बगले में एगो मारल सियार पड़ल हल। ओकरे बगल में लइका हग देलक हल आउ ओहिजे चटाई पर पड़ल मेमिआइत हल। एगो गेन्दरा निकाल लैलक आउ ओकरा पर हमरा बइठे कहलक। हमरा चक्कर आवे लगल, तइयो हम गेन्दरा पर बइठ गेली। तुरते उड़िस के जबरदस्त हमला भेल। दिने खनी हम्मर देह पर चढ़े लगल। बदबू के एगो भभक्का हम्मर नाक में घुस गेल। जदि थूक फेंके बहरी न निकलती हल तो गस आ जाइत हल।

जइसहीं तम्बू से निकलली तऽ साहिल मारे ओला डोमन बोलल—'बाबू, हमरा हीं तनि चलऽ, मेहरारू तीन दिन से बेमार हे। डॉक्टर से कह के कुछ गोली-उली दिया देतऽ हल।'

जइसहीं हम ओकर तम्बू में घुसली तऽ देखली कि ऊ साहिल के भूँज रहल हल। बिन तेल के भूँजे से चिराइन महकइत हल। हम्मर नाक में फिनो बदबू घुसल, तऽ हमरा ओंकाई बरे लगल। तम्बू के बहरी खड़ा रहली आउ कहली—'हमरा साथे चल, डॉक्टर से दवाई दिला दियो।'

भुलनी टुभक पड़ल—'डॉक्टर से दवाई का दिलयबऽ बड़ बाबू, एकर घर में आजे तक तो हियो। कल से चन्दू हीं चल जइबो। ई छव महीना ला हमरा बंधिक रख देलको हे।'

डोमन झँझुआयल—'आज भर हमरा हीं हे तऽ, हम्मर फर्ज का हे ? आउ सब दिन ला तूँ चन्दू हीं जाइत हें ? छव महीना के बाद तो आइए जइबे। अगर ओहु बेमार बनाके भेजको आउ एकाध गो लेले आ गेलें, तऽ उपरे से खियावे-पियावे के आफत।'

भुलनी गुम हो गेल आउ माँस भूँजे में लग गेल।

हम डोमन से पुछली—'सच बताव डोमन, तऽ हम तोरा मदद करबो। तोहनी गाँव के लइकन के ठग के ले जाहें आउ सहर में बेच दे हें। अइसन काहे करऽ हें ?'

'ई काम हमनी कइसे कर सकऽ ही बाबू ! ई तो सूट-बूट पेन्हे ओलन मिनिस्टर आउ अफसर के लइकन-फइकन करऽ हथन। हमनी से ई सब काम पटत ?'

तम्बू के वातावरन आउ ई कड़वा सच सहे के ताकत हमरा में न हल। से हम कल फिनो आवे के बहाना करके उहाँ से चल देली। तेजी से चल के घरे पहुँचली तऽ तिलेसरी के माय तिलेसरी के खोजे भुलेटन हीं चल गेल हल।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

(क) लेखक के कउन घटना परभावित कइलक ?

(ख) 'खोपिया-उपिया नऽ ही बाबा ! हम एगो तोहनिये नियर अदमी ही'—ई के कह रहल हे आउ काहे ?

(ग) तम्बू के कबाड़ीखाना काहे कहल गेल ?

(घ) 'ऊ साहिल के भूँज रहल हल'—ई वाक्य से तोर मन में जीउ के प्रति का भाव उठऽ हे ? बतावऽ।

(ङ) पाठ से पाँच गो प्राकृतिक दिरिस के नाम बतावऽ।

लिखित :

1. 'बराबर के तलहट्टी में' पाठ के लेखक के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. खानाबदोसी केकरा कहल जाहे ?
3. डोमन आउ भुलनी के माध्यम से नट-नट्टिन के जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखऽ।
4. सेयान होइत बेटी के मतारी कउन सीख देवऽ हे ?
5. खानाबदोस लोग मांस खायला बराबर पहाड़ से कउन-कउन जीउ पकड़ के लावऽ हथ ?
6. तिलेसरी काहे अकचका गेल ?
7. नट-नट्टिन के जीवन के सभ्य बनावे खातिर सरकार के तरफ से कउन-कउन उपाय कैल जाए ? अप्पन समझ से लिखऽ !
8. नीचे लिखल वाक्य के संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :

(क) ई काम हम कइसे कर सकऽ ही बाबू, ई तो सूट-बूट पेन्हे ओलन मिनिस्टर आउ अफसर के लइकन-फइकन करऽ हथन।

(ख) ...ी कइसे निगलऽ हें, तोहनियो तो आखिर अदमिये हें।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल मुहावरा के अर्थ लिखऽ आउ वाक्य में प्रयोग करऽ :

   (क) सात घाट के पानी पीना ।

   (ख) आँख से खा जाना ।

   (ग) बतीसी दिखाना ।

   (घ) अक्किल गुम होना ।

   (ङ) आम के आम गुठली के दाम ।

योग्यता-विस्तार :

1. 'सरकार हमनी के अदमी कहाँ बुझऽ हे।' ई वाक्य में लेखक के कउन भाव प्रकट होवइत हे ?
2. बराबर के तलहट्टी पर एगो छोट निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ :

माय	—	माँ
खखुआयल	—	खिसिआयल
धर	—	पकड़
कपार	—	माथा
उपट गेल	—	बिला गेल
दूरा	—	दलान
रहस्य	—	राज
खोपिया	—	खुफिया, गुप्तचर
भिर	—	नजदीक
गेन्दरा	—	बिछौसी
गस	—	बेहोसी
फर्ज	—	करतब

●●●





रवीन्द्र कुमार

रवीन्द्र कुमार के जनम नालंदा जिला के बिहार शरीफ में 6 जनवरी 1936 के भेल हल। रवीन्द्र कुमार पर मगही भासा के नाज हे। इनकर कहानी में मगही भासा के सब्द-सौंदर्य, निखर उठऽ हे। ग्रामीण जिनगी के लालित्य अप्पन पूरा संवेदना के साथ उनकर कहानी में मौजूद हे। कई दर्जन कहानी के रचनाकार रवीन्द्र कुमार के कहानी रचना आउ सिल्प के स्तर पर कउनो भासा के कहानी के समानान्तर खड़ा हो सकऽ हे। इनकर परकासित कहानी संकलन के नाम हे 'अजब रंग बोले'।

'पित्तर के फुचकारी' में बाल सुलभ प्रवृत्ति के जबरदस्त झलक मिलऽ हे। पिता के पुत्र के प्रति मोह-ममता उमड़ पड़ऽ हे। लइकन के फुसलावे ला दादी कहानी सुनावऽ हे। आर्थिक तंगी यानि कि पइसा के कमी से पिता के क्रोध पैदा होवऽ हे, जेकरा कारन ऊ पुत्र के पीट देहे। ओकरा पित्तर के फुचकारी खरीदे के छमता न हे। बाद में ऊ पुत्र के देख के रो पड़ऽ हे। ओकरा प्यार करे लगऽ हे। ई देख के नायक के माय के ममता भी उमड़ पड़ऽ हे।

पित्तर के फुचकारी

'नयँ, हम लेम तो ओइसने लेम !'

'ओइसन लेके तूँ की करबहीं रे; आँय ? तोरा ओकरो से नीमन ला देबउ। ओइसन पोवार नीअर पीअर फुचकारी की लेमँऽ ? तोरा हम चानी नीअर चम-चम ला देबउ। हहरऽ हें काहेला ?'

'नयँ, हम लेम तो छोटुए अइसन लेम !'

'अच्छे, चुप रह ! ला देबउ।'

ऊ बुतरुआ फिनूँ लाहरी करे लगल। रामधनी के मिजाज गरम हो गेल — 'अरे ससुर, कहलिअउ तो, ला देबउ। एते जिद्दी काहे हो जाहें।'

बुतरू के जात, झिड़की सुनके चुप हो गेल। रामधनी कंधा पर अंगोछा रखलक आउ फाँड़ा में दूगो रुपइया लेके चलल बजार। बजार पहुँचला पर एक ठमा देखलक कि ढेर सा पित्तर के फुचकारी लटक रहल हे–ठीक बुद्धन के बेटवा छोटुए जइसन। रामधनी मन में सोचलक—'होलिओ रोज-रोज आवऽ हे ! छौंड़ा के मन आज रख लेल जाय। बस ऊ दोकान पर बढ़ के दोकनदार से ओकर दाम-साम करे लगल—'एकर केतना दाम हो ?'

'सवा तीन रुपइया।'

'बाप रे, एतनिएँ गोके सवा तीन रुपइया लेबहूँ ?'

'अरे खरीदे के मन नयँ रहो तो दाम मत पूछल करऽ।'

दोकनदार के घुड़की सुनके रामधनी सकदम में पड़ गेल। कइसहुँ फिनूँ बोलल—'अच्छे भाई, ने हम्मर बात ने तोहर। पउने दू रुपइया में दे देहूँ।'

'एजा मोल-जोल नयँ कइल जाहे। कोई दोसर दोकान देखऽ !'

'भाई जी, एकरा में दोसर दोकान के कउन बात हे ! दू रुपइया तलक हम्में दे दे सकऽ हिओ।'

'कहबे करऽ हऽ, तो तीन रुपइया से कम नयँ लगतो। लेवे के हो तो लऽ; नयँ तो... ?'

'तीने रुपइया काहे; हम तो तोरा सवा-तीनो गो दे देतिओ हल, बाकि अखनी हमरा हीं बेसी नयँ हे। नयँ तो एत्ते घिघिअइतियो नयँ हल। एहू दू रुपइया हम बुतरू के मन रक्खे ला दे रहलिओ हे।'

'एतना में नयँ होतो।'

लचार होके रामधनी आगे बढ़ल। सोंचे लगल, टीने के काहे ने ले लेउँ ? चार-पाँचे आना में काम चल जायत ! अरे बुतरू जात के हिरिस हइ आउ का ! अप्पन रहते ऊ तुरते भुला जायत। पित्तर के फुचकारी ओकर खियालो से उतर जायत। फिन परबो लागी तो सर-सरजाम लेवे के हे। दुइए रुपइया में सभे करे के हे।

सब गम-बुझ के रामधनी सौदा कैलक आउ घरे लउट गेल। बजार से अइते देख के धनुआँ हुलसते बाप भिर गेल। रामधनी अप्पन हाथ के फुचकारी ओकर हाथ में थम्हाँ देलक। धनुआँ जे टीन के फुचकारी देखलक, से जर के खाक हो

गेल। फुचकारी के कस के अँगना में फेंक देलक। संजोग के बात, फुचकरिया फेंका के अँगनमा के इनरवा में चल गेल। अब रामधनी के गोस्सा के कोय ठेकाना नयँ रहल। दे थप्पड़, दे थप्पड़, धनुआँ के अन्हुआ देलक। धनुआँ भोंकार पार के काने लगल। ओन्ने धनुआँ के मामाँ ओकरा जे कानते सुनलक से हाँहे-फाँहे धउगल आयल। रामधनी से छीन के धनुआँ के करेजा से साट लेलक आउ गुदाल कर-कर के लगल रामधनी के गरियावे—'हाय रे हाय ! बचवा के मारिए देलक। अरे टूअर-टापर बचवा पर हाथ उठयते गल नयँ गेलउ रे !'

धनुआँ के मामाँ अपने बेटवा के गरिया रहल हल। महल्ला-टोला के दू-चार अदमी मजा लेवे ला जमा हो गेल। धनुआँ के मामाँ कस-कस के गरिअइले हल। ऊ तखनी तक गरिअइते रहल जखनी तक ओकर मुँह नयँ पिरा गेल। रामधनी खिसिआयल–ठिसुआयल ओज्जा पर से टर गेलक।

होली के धूम मचल हल। रंग-अबीर से सबके हाल देखहीं लायक हल। ढोल-मँजीरा पर फाग के धूरी उड़ रहल हल। सगरो मस्तीए-मस्ती छायल हल।

गोस्सा के मारे धनुआँ के मामाँ परब में कुच्छो नयँ पकौलक। पोतवा लागी खाली चार पइसा के बुनिया आउ दू पइसा के तेलही जिलेबी ले आयल। धनुआँ मुँह फुलयले हल, से बड़ी खोसामद करे से तनि-मनि खयलक-पीलक।

रस्से-रस्से साँझ हो गेल, फिन रात। दादी-पोता ओसरे में खटिया पर पड़ गेल, मामाँ खिस्सा सुनावे लगल—

'एगो रानी हल। रानी के एगो बेटी हल .....'

धनुआँ धिआन लगा के खिस्सा सुने लगल।

'...एतने कहानी

बोद्दा रानी

बोद-बुदक्कड़

चुल्हा ऊपर लक्कड़

चुल्हा पर चकठी

धनुआँ के सास नकटी...'

धनुआँ अप्पन सास के नकटी सुनके लजा गेल। ऊ मामाँ के अप्पन छोट-छोट हाथ से मारे लगल। मामाँ हँसते-हँसते बोलल—'अच्छा भाय, धनुआँ के सास नयँ, रानी के सास नकटी।'

तब कहीं धनुआँ अप्पन हाथ रोकलक—'फिन रानी की कहलकइ मामाँ ?'

'रात केत्ते भींग गेलउ बेटा, अब सरदार निअर चुप्पे-चाप सुत रह। खिस्सा खतम, पइसा हजम।'

'नयँ-नयँ, जो !'

'तूँ तो भुका के रख देहे' रे ! अच्छा सुन.....' खिस्सा चलते रहल। दादी-पोता खिस्सा कहते-सुनते कखनी सुत गेलन, एकर खबर केकरो न होयल।

ओन्ने रामधनी पुरवारी ओसरा में खटिया पर पटायल हल। आज की जाने काहे ओकरा धनुआँ के माय के इयाद आ रहल हल। धनुआँ के माय साँप के काटे से मर गेल हल। मरे बखत ऊ चेतउले गेल हल—'देखिहऽ जी, छौंड़ा पर धिआन रखिहऽ। अइसन ने टूअर-टापर बुतरू निअर हम्मर पीछू में एहू बिलट-बिलट के मर जाय।'

रामधनी के आउ नयँ रहल गेल। गते-गते चोर निअर ऊ अप्पन माय के खटिया भिर गेल। धनुआँ सुतल हल। गाल पर बहल लोर के सुक्खल धार इँजोरिया में भक-भक लउक रहल हल। रामधनी धनुआँ पर झुक गेल। ओकर परेम में दिवाना निअर करे लगल। ऊ कभी धनुआँ के गाल चूमे कभी लिलार। रामधनी के माय अदमी के गंध पइलक, से झट खटिया पर से उठ गेल। रामधनी के पेआर करते देखलक तो सल्ले-बल्ले पाया भिर चल गेल। ओकरो आँख से लोर बह-बह के गिरे लगल।

तुरते खियाल पड़ल—'हाय रे हाय ! हम्मर बेटवा आज परबो में एगो खुदियो मुँह में न डाललक। होली जइसन परब फिन कहिआ आयत !' अधरतिये में गोइंठा जोड़ के ऊ पकावे चलल।

धनुआँ कुलबुला के उठ गेल। बाप के जे एत्ते दुलारते देखलक, से फूट के काने लगल। रामधनिओं से नयँ रहल गेल। बुतरुओ से बत्तर ऊ काने लगल। आँख से बरखा के नदी निअर धार बहे लगल।

ओन्ने असमान में चाँद सब्भे-कुछ देख रहल हल। दुनिया भर के फुचकारी के रंग के चाहे ऊ पित्तर के होय चाहे टीन के, ऊ केकरो से नयँ रंगायल हल। केकरो

हँसी-खुसी के परभाव ओकरा पर नयँ पड़ल हल। बाकि ई देख के ओकरो आँख छलक आयल। ओकर लोर से टाँड़-टिल्हा, घर-दुआर सभे ओद्दा हो गेल।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानी के तीन मुख्य तत्व बतावऽ।

   (ख) धनुआ मामा के अप्पन छोट-छोट हाथ से काहे मारे लगल ?

   (ग) 'ओन्ने असमान में चाँद सभे-कुछ देख रहल हल'—ई वाक्य मे कउन भाव के दरसावल गेल हे ?

   (घ) कहानी में कउन पात्र तोर मन मोह लेवऽ हे आउ काहे ?

   (ङ) 'होलियो रोज-रोज आवऽ हे ?' एकरा से कउन भाव निकलऽ हे, समझावऽ।

लिखित :

1. रवीन्द्र कुमार के पाँच पंक्ति में परिचय दऽ ।
2. कहानी सिल्प के मोताबिक 'पित्तर के फुचकारी' कहानी के कसउटी पर कसऽ ।
3. ई कहानी के माध्यम से का सनेस मिलऽ हे ? पाँच वाक्य में बतावऽ ?
4. दोकनदार आउ रामधनी के बतकही पाँच वाक्य में लिखऽ।
5. रामधनी के चरित्र के पाँच गो विसेसता बतावऽ ।
6. रामधनी के आँख से लोर काहे बहे लगल ?
7. धनुआँ फूट के काहे काने लगल ?
8. रामधनी ला होली कइसन रहल ? एकरा से तोरा पर का असर पड़ऽ हे ?
9. 'पित्तर के फुचकारी' एकर सीर्सक काहे रखल गेल हे ?
10. नीचे लिखल वाक्य के व्याख्या करऽ :

    हाय रे हाय ! हम्मर बेटवा आज परबो में एगो खुदियो मुँह में न डाललक। होली जइसन परब फिन कहिआ आयत !

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके ओकर अर्थ बतावऽ ।
2. पाठ से पाँच गो समासिक सब्द चुनके बतावऽ।
3. पाठ से चार गो सहचर सब्द चुनके बतावऽ।

योग्यता-विस्तार :

1. कोई अइसने कहानी विद्यालय के पुस्तकालय से चुन लावऽ आउ किलास में सुनावऽ ?
2. ई कहानी में गरीबी आउ ममता के बीच जे संबंध बतावल गेल हे, ऊ तोरा विचार से केतना मेल खाहे ?

सब्दार्थ :

निमन	—	अच्छा
बुतरू	—	लड़का
घिघियाना	—	गिड़गिड़ाना
झकझक	—	साफ-साफ
अखनी	—	अब

●●●

